मुझसे इक नज़्म का वादा है

(काव्य संग्रह)

जे पी सिंह "साहिर"

BlueRose ONE .com
Stories Matter
New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © J. P. Singh "Sahir" 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-365-6

Cover Design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: October 2026

पेश लफ़्ज़

मुझे शायरी में दिलचस्पी कब हुई, ठीक ठीक कह पाना मुश्किल है। यूँ समझ लीजिए कि जब से होश सँभाला तब से ही या यूँ कह लीजिए कि जब लफ़्ज़ पढ़ने आने लगे तब से। स्कूल के कमरे की दीवारों पर कबीर, रहीम के दोहे और देश-भक्ति के बारे कुछ सतरें लिखी रहती थीं। उन्हें पढ़कर अच्छा लगता था। शायद इसलिए कि उनके आख़िरी अल्फ़ाज़ एक जैसे सुर में होते थे। तब नहीं पता था कि ऐसे अल्फ़ाज़ को "राईमिंग वर्ड्ज़" कहते हैं और जहाँ राइम हो उसको कविता कहते हैं। उन दिनों में ही मैंने उनकी नक़ल करते हुए कुछ राईमिंग सतरें लिखीं। मुझे अच्छी लगीं। उन्हें बार-बार पढ़ता। मज़ा आता। फिर कुछ और भी लिखीं मगर कभी किसी को दिखाई नहीं क्योंकि घर में दादा-दादी, माँ-बाप, चाचा, बुआ का शायरी से दूर-दूर तक कोई नाता न था और मास्टर जी को दिखाने की कभी हिम्मत नहीं हुई। ख़ैर यह सिलसिला चोरी-चोरी चलता रहा। छठी में था जब ज़िन्दगी में पहली बार रेलवे स्टेशन अकेले जाने का इत्तेफ़ाक़ हुआ। गाड़ी आने में देर थी। प्लेटफार्म पर टहलते-टहलते बुकस्टाल दिखाई पड़ा। अचानक एक छोटी सी किताब पर नज़र पड़ी। नाम था "मेरे गीत तुम्हारे हैं"। एक रुपया क़ीमत थी, सो ख़रीद ली। ट्रेन आ गई थी। बैठते ही पढ़ना शुरू किया। ग़ज़लों के बाद नज़्में, फिर कुछ ग़ज़लें, उनके बाद फिर नज़्में। पहली बार बिना राईमिंग वाली भी कविताएँ पढ़ीं, लेकिन पूरा मज़ा आ रहा था। समझ में आ रहा था कि कविता ऐसे भी लिखी जा सकती है। अगले आधे घंटे में मेरी दुनिया बदल चुकी थी। क्या कमाल की शायरी थी। क्या चुन-चुन कर पिरोए अल्फ़ाज़, खुली कविता में भी कमाल का रिद्म, बात कहने का हुनर। शायर का नाम बड़े टेढ़े-मेढ़े तरीक़े से लिखा हुआ था। "साहिर लुधियानवी"। इससे पहले न तो मैंने शायरी की कोई किताब पढ़ी थी न किसी शायर का नाम सुना था। लेकिन जो भी था वो साहिर हमेशा मेरे ही साथ रहने लगा। मैंने अनगिनत बार पढ़ा इस किताब को। सारी किताब ज़ुबानी याद हो गई थी मुझे। दोस्तों को शायराना अन्दाज़ में वो नज़्में सुनाता तो बहुत दाद मिलती। कुछ तो साहिर लुधियानवी ही कहने लगे थे मुझे। मुझे भी साहिर नाम

अच्छा लगने लगा था। नहीं जानता कि जब साहिर साहब अपना कलाम सुनाते होंगे, किस अन्दाज़ में सुनाते होंगे लेकिन साहिर साहब का कलाम सुनाते हुए मैं ख़ुद को साहिर ही समझता था। बड़ा हुआ तो मालूम हुआ कि साहिर लुधियानवी की किताब का असली नाम "तल्ख़ियाँ" था जो उर्दू में छपी थी लेकिन हिन्दी संस्करण में उसका नाम बदल कर "मेरे गीत तुम्हारे हैं" कर दिया गया था। ख़ैर, असली मुद्दा ये कि साहिर साहब को पढ़ते सुनाते मैं भी कहीं न कहीं शायर हुआ जा रहा था। अख़बार, रिसालों और किताबों में लिखी कविताओं को पढ़ते-पढ़ते मैं भी अच्छी कविता करने लगा था और जैसे-जैसे बड़ा होता गया और शायरों को भी पढ़ने लगा। मीर तक़ी मीर, मिर्ज़ा ग़ालिब, शेख़ इब्राहिम ज़ौक़, नज़ीर अकबराबादी, मिर्ज़ा रफ़ी सौदा, मजाज़ लखनवी, नवाब मिर्ज़ा ख़ाँ दाग़, बहादुर शाह ज़फ़र, अहमद नदीम क़ासमी, अल्लामा इक़बाल को पढ़ते हुए इब्ने इँशा, हफ़ीज़ जालन्धरी, क़तील शिफ़ाई, शकील बदायूँनी, अब्दुल हमीद अदम, अख़्तर शीरानी, जोश मल्सियानी, कैफ़ी आज़मी वगैरह को पढ़ते-पढ़ते एक लम्बे वक़्फ़े के बाद गुलज़ार साहब पर आकर जैसे रुक गया। वही एहसास जो बचपन में साहिर को पढ़ने पर हुआ था, ठीक वैसा ही गुलज़ार साहब को पढ़ने पर भी हुआ। यहाँ एक बहुत ही दिलचस्प क़िस्सा सुनाना चाहूँगा जिसके ज़रिए मैं गुलज़ार साहब के बारे जान सका। हुआ यूँ कि यूनिवर्सिटी में पढ़ते हुए अपने से तक़रीबन दस साल बड़े एक साहब दोस्त बने जिनको शायरी का बेहद शौक़ था। दो तीन एम.ए. और कुछ डिप्लोमे कर चुके थे। ख़ुद तो पँजाबी में ग़ज़ल कहते थे लेकिन जब मूड में होते तो उर्दू में एक से एक बेहतरीन शे'र सुनाते। जाने कितने अश्आर ज़ुबानी याद थे उनको। मुझसे दाद मिलती तो ख़ुश होते। एक दिन बहुत हिम्मत करके मैंने दो चार दिन पहले लिखी अपनी एक नज़्म उनको सुनाई तो सुनकर बोले, "वाह! गुलज़ार साहब का तो कोई जवाब ही नहीं।" जब मैंने पूछा कि गुलज़ार कौन, तो बोले जिसकी नज़्म सुनाई है तुमने। मैंने जब बताया कि वो नज़्म मैंने लिखी थी तो माने नहीं। उनको यक़ीन दिलाने के लिए मैंने उनको अपनी और दो तीन नज़्में सुनाईं तो बोले, "क्या कमाल लिखते हो यार, पहले कभी बताया क्यों नहीं।" मैंने कहा, एक ख़ौफ़ सा रहता है दिल में कि नज़्म अच्छी बन पाई होगी या नहीं। वो मुझे होस्टल के अपने कमरे में ले गए और मुझे एक पतली सी बिना जिल्द की कुछ कुछ फटी हुई एक किताब देते हुए बोले, "ये है

गुलज़ार।" किताब का उनवान तो याद नहीं लेकिन शायद "एक बूँद चाँद" था। ये भी नहीं याद कि उस किताब में सिर्फ़ गुलज़ार साहब की ही नज़्में थीं या औरों की भी। ख़ैर, उस किताब के ज़रिए मैं गुलज़ार साहब की कुछ नज़्में पढ़ पाया। बहुत अच्छी लगीं और सोचा कि मैं तो इनके आसपास भी नहीं। मालूम हुआ कि ये वही गुलज़ार साहब हैं जो फ़िल्मों के गाने लिखते हैं। फिर उनके हर गाने को ग़ौर से सुनने लगा। हर लफ़्ज़ के मानी और गीतों में उनके इस्तेमाल की जड़ तक जाने लगा। उनका अलग अन्दाज़ लुभाने लगा तो सोचता काश मैं भी ऐसा लिख पाऊँ कभी।

फिर वो दौर आया जब आर्मी की ट्रेनिंग के दौरान अपनी ही सुध नहीं रहती थी तो शायरी कहाँ सूझती। दस साल की आर्मी सर्विस के दौरान बहुत कम लिख पाया। ये वो दौर था जब लगने लगा कि अब शायरी नहीं होगी मुझसे। न कोई मिसरा ही दस्तक देता ज़ेहन पर न कोई शे'र बनता। तक़रीबन दस बारह साल तक दफ़्तरी फ़ाइलों के अलावा एक लफ़्ज़ नहीं लिखा। मैं सोचता कि रोज़ी-रोटी के चक्कर में मैं सरस्वती देवी को भूल बैठा था सो अब सरस्वती देवी की कृपा नहीं रही मुझ पर। फिर एक दिन मेरी ज़िन्दगी में फिर से एक और दोस्त की आमद हुई। मुझसे दस साल बड़े, फ़िज़िक्स के प्रोफ़ेसर लेकिन पँजाबी में शानदार और जानदार ग़ज़ल कहने वाले... उर्दू अश्आर का ख़ज़ाना लिए हुए। अक्सर शामों को जब हम इक्ट्ठे बैठते, एक से एक बेहतरीन शे'र सुनाते। मेरे दाद देने के अन्दाज़ से उनको ये अन्दाज़ा हो गया था कि मुझे शायरी की अच्छी समझ है। एक दिन उन्होंने मुझसे भी कुछ सुनाने को कहा तो मैंने अपनी एक ग़ज़ल के अश्आर सुनाए जिनको उन्होंने काफ़ी पसँद किया। उन्होंने मेरी हौसला-अफ़ज़ाई की और मुझे और लिखने को कहा। आहिस्ता-आहिस्ता कलम चलने लगी और मैं फिर से लिखने लगा। उन्होंने ही मुझे बताया कि मैं ग़ज़ल से ज़्यादा अच्छी नज़्म लिखता हूँ और मुझे नज़्म पर ज़्यादा तवज्जोह देनी चाहिए। उन्हीं दिनों एक बुकस्टाल पर एक किताब नज़र आई। नाम था, "पुखराज" और शायर गुलज़ार। मेरी तो जैसे लॉटरी ही लग गई। गुलज़ार साहब की इक्का-दुक्का नज़्म तो कभी-कभार पढ़ने को मिल जाती थी मगर इतना सारा गुलज़ार एक साथ एक ही किताब में... खुशी का ठिकाना नहीं रहा। फिर जैसे कोई शराबी खुशी में सारी की सारी बोतल पी जाता है ना, ठीक वैसे ही मैंने "पुखराज" नाम की इस बोतल को एक ही बार में पूरा पी डाला। बार-बार पिया। हर रोज़ पिया। आपने वो

कहानी तो ज़रूर सुनी होगी जिसमें एक बेहद ग़रीब इन्सान को भूख से बेहाल पाकर भगवान प्रकट होते हैं और उसे एक बर्तन देते हैं और कहते हैं कि तुझे जब भी भूख लगे इस बर्तन में हाथ डालकर अपना मनचाहा खाना निकाल कर खा सकते हो और दूसरों को भी खिला सकते हो।

"पुखराज मेरे लिए जादू का वो बर्तन है जो कभी ख़ाली नहीं होता। इसमें ऐसी बरकत है कि जब कभी लिखते-लिखते कहीं अटक जाता हूँ या नज़्म कहते हुए सही लहजा पटरी से उतरने लगता है तो "पुखराज" को पढ़ने लगता हूँ और कुछ ही मिनटों में वो लय, वो लहजा पकड़ में आने लगता है। इस जादुई बर्तन से बहुत खाया है मैंने और अब दूसरों को भी खिलाने निकला हूँ। इतने बरसों से गुलज़ार साहब को पढ़ते-पढ़ते मैंने जो भी सीखा है, जो भी लिखा है, वो इस मजमुए में शामिल है। इसे पढ़कर अगर कोई कहे कि मैं गुलज़ार साहब की नक़ल करता हूँ तो मेरे लिए ये बहुत बड़ा एज़ाज़ होगा। गुलज़ार साहब जैसा लिख पाने की सलाहियत हासिल कर पाना शायरी की माऊँट एवरेस्ट चढ़ सकने जैसा है। उनके जैसा तो नहीं, उनके आसपास भी पहुँच जाऊँ तो ग़नीमत समझूँगा।

ये मजमुआ आपके हाथों में कभी नहीं होता अगर दोस्तों ने मेरी नज़्में सुनकर मुझसे किताब छपवाकर उन्हें देने को न कहा होता। उनके लिए लिखूँगा तो ज़ाहिर है आपको भी मिलेगी ही। लेकिन अपनी इन नज़्मों को इस मजमुए की शक्ल देने की कोशिश में जिस कश्मकश से गुज़रा हूँ मैं, वो मैं ही जानता हूँ। आदतन मैं कहीं भी किसी भी चीज़ पर लिख देता और लिख कर भूल भी जाता था। जब भी कोई माक़ूल लफ़्ज़, मिसरा, शे'र, मुकम्मल ग़ज़ल या नज़्म ज़ेहन पर दस्तक करता मैं ऐन उसी वक़्त उसे नोट पैड, सिगरेट की डिबिया, पेपर नैपकिन, अख़बार और यहाँ तक कि अपने रूमाल पर भी लिख डालता था। रूमाल पर लिखा तो धोने से पहले किसी काग़ज़ पर उतार लेता, सिगरेट की डिबिया पर लिखा तो उसे फेंकने से पहले काग़ज़ पर नक़ल कर लेता मगर बाकी यहाँ-वहाँ लिखा हुआ कभी सँभाला नहीं। जब दोस्तों ने किताब छपवाने को कहा तो असली मशक़्क़त शुरू हुई। मेरी समझ में शायरी करना और उसे एक जगह इकट्ठा करके किताब की शक्ल में छपवाने लायक बनाना दो अलग-अलग काम हैं। पहला यानि शायरी करना आसान है क्योंकि वो अल्लाह की बरकत है जो बिन माँगे ज़ेहन में आती है और उसे बस काग़ज़ पर

उतारना होता है। ऐसा करते वक़्त अगर कहीं लगे कि कहीं किसी लफ़्ज़ की उँगली पकड़कर, किसी मिसरे को हाथ लगाकर या किसी शे'र को कन्धा देकर उसे बेहतर शक्ल दी जा सकती है तो बस वही करना होता है जबकि दूसरा यानि किताब की शक्ल देना कीचड़ में फँसी भैंस निकालने जैसा है। इधर-उधर बिखरी पड़ी नज़्मों को ढूँढना, फिर उन्हें दोबारा लिखना, तरतीब देना वगैरह बड़ी मशक़्क़त का काम है जो मेरे बस का था ही नहीं। शायरी करना सुकून देता है जबकि उसे फिर से लिखना निरी क्लर्की करना है और ये बात कोई क्लर्क ही बता सकता है कि ये कितना बोरिंग काम है। यही वजह है कि मैं अपनी शायरी को अब तक किताब की शक्ल नहीं दे सका था। ख़ैर इस मजमुए को आप तक पहुँचाने के लिए ये क्लर्की भी की मैंने और नतीजतन ये मजमुआ आपके हाथों में है।

इस मजमुए का उनवान भी मैंने गुलज़ार साहब की एक नज़्म से मुतास्सिर होकर रखा है। हालांकि इसी उनवान से मेरी भी एक नज़्म इस मजमुए में शामिल है फिर भी ये उनवान गुलज़ार साहब से इतना सीखने के एवज़ में मेरी तरफ़ से उनकी ख़िदमत में ख़राज-ए-अक़ीदत पेश करने के मक़सद से चुना है मैंने। ये मेरी तरफ़ से मेरी ज़िन्दगी में उनकी शायरी की अहमियत का ऐतराफ़ है, शुक्र-गुज़ारी है।

इस मजमुए में शामिल नज़्मों के बारे मैं कुछ नहीं कहूँगा। मैंने जो कहना था वो नज़्मों के ज़रिए कह दिया है। अब आगे जो भी कहेंगे आप ही कहेंगे क्योंकि अब ये नज़्में मेरी नहीं हैं, आपकी हैं। आपके लिए हैं। अच्छी लगें तो दो लफ़्ज़ लिख देना। ख़ुशी होगी। अच्छी न लगें तो दो से ज़्यादा लफ़्ज़ लिखने की ज़हमत उठाना। ख़ुशी होगी कि आप मेरी आने वाली नज़्मों को बेहतर देखना चाहते हैं।

साहिर

गुलज़ार साहब के लिए

तुम जैसा लिखने की ख़्वाहिश
मेरे दिल में ज़िन्दा है
तुम तक पहुँच नहीं पाई है
क़लम मेरी शर्मिन्दा है
तुम दर्द पिरोते हो कैसे
अल्फ़ाज़ में जादू बुनते हो
जज़्बात ब्याँ करते हों जो
वो लफ़्ज़ कहाँ से चुनते हो
ये हुनर कहाँ से पाया है
कुछ मुझको भी तो बतलाओ
मैं इसी हुनर का तालिब हूँ
मुझको भी ये सब सिखलाओ
गुलज़ार गुज़ारिश है तुमसे
अब मेरा भी उद्धार करो
बस मेरे सर पर हाथ धरो
और मुझको भी गुलज़ार करो ।।

फ़ेहरिस्त

1. बातें 1
2. लम्हा 2
3. रेल 3
4. रात 4
5. नज़्म 5
6. नाराज़गी 6
7. नाम 7
8. इज़हारे-मुहब्बत 8
9. तन्हाई 9
10. चालाक 10
11. एको प्वाइंट 11
12. तस्दीक़ 12
13. दर्द 13
14. शाहकार 14
15. यादें 15
16. साँस 16
17. अमृत वेला 17
18. शायर 18
19. एहसास 19
20. सूरज-1 20
21. सूरज-2 21
22. सूरज-3 22
23. सूरज-4 23

24. सूरज-5 24
25. सूरज-6 25
26. सूरज-7 26
27. सूरज-8 27
28. साँईंसदाँ 28
29. फ़लक 29
30. गुस्सा 30
31. धूप 31
32. तारे 32
33. पूरनमासी 33
34. मिरचें 34
35. सुबह 35
36. बिज़ी 36
37. सियासतदाँ 37
38. दिन 38
39. प्यार 39
40. ज़ख़्म 40
41. रूहें 41
42. घोड़ा 42
43. वक़्त 43
44. कैनवस 44
45. चकमक 45
46. कुड़ियाँ 46
47. चाँद 47
48. जिस्म 48
49. दिन 49
50. सीवर 50

51. तकिया.....51
52. याद.....52
53. लफ़्ज़तराश.....53
54. गुड्डो.....54
55. नाबीना.....55
56. एक्सीडेंट.....56
57. रिश्ता.....57
58. अश्क.....58
59. सच.....59
60. सुकून.....60
61. वबाएँ.....61
62. मक्खी.....62
63. दिले-मुन्तज़िर.....63
64. अल्फ़ाज़.....64
65. मुन्तज़िर.....65
66. आँखें.....66
67. मुसव्विर.....67
68. क़वायद.....68
69. अख़बार.....69
70. तफ़रीह.....70
71. ग्रह-चक्कर.....71
72. सय्यारे.....73
73. मिलन.....74
74. सोच.....75
75. नदी.....76
76. बेटा.....77
77. बीवी-1.....78

78. बीवी-2 79
79. ज़िन्दगी और मौत 80
80. मुझसे इक नज़्म का वादा है 81
81. हम दोनों 83
82. बिज़नेस 84
83. बिरहन 85
84. दुआ 86
85. ज़िन्दगी 87
86. वसन्त 88
87. मुहब्बत 89
88. तेरी आँखें 90
89. शिकवे 91
90. मिस वर्ल्ड 92
91. बोसा 93
92. रात और मैं 94
93. ख़ुशियाँ 95
94. दो मिसरे 96
95. लव ट्राएँगल 97
96. आईना 98
97. हमज़ाद 99
98. फफोले 100
99. कली 101
100. आज का दिन 102
101. इन्सान 103
102. ख़बरें 104
103. तेरे बिन 106
104. बीमार दिन 107

105. मुक़य्यद.....108
106. बरसात.....109
107. अफ़सर.....110
108. ब्यास.....111
109. लफ़्ज़.....112
110. ढोंग.....113
111. झूठा.....114
112. चाँद.....115
113. डिलीवरी.....116
114. गुलज़ार साहब के यौमे-विलादत पर.....118
गुलज़ार – 1.....119
गुलज़ार – 2.....120
त'आरुफ़.....121



1. बातें

तुझसे कहने की कितनी बातें हैं
अनकही सी ज़ुबाँ पे अटकी हैं
कह नहीं सकता इन्हें तेरे तग़ाफ़ुल से कभी
बेसुनी सी फ़ज़ा में भटकेंगी
तुझसे तौफ़ीक़ मिले तो अयाँ होने दूँ
तू मुख़ातिब हो तो कह दूँ तुमसे ।।







2. लम्हा

हमारे बीच
ये जो लम्हा गुज़र रहा है अभी
लो इसका इक सिरा थामो
और खींच कर लम्बा कर दो इसे
दोनों सिरों से खींच कर हम
इस हसीं लम्हे की उम्र बढ़ा दें
और फिर जी भर के जीएँ
इस हसीं लम्हे में हम
अपनी तमाम उम्र
हमारे बीच जो गुज़रेगा लम्हा
जाविदाँ हो जाएगा ।।







3. रेल

मेरे घर के पास गाँव में
रोज़ शाम को और सुबह
चीख़-चीख़ कर रुकती है
और फिर वो रेल गुज़रती है
टिक जाती हैं नज़रें
घर के फाटक पर
रोज़ नहीं आता है वो मेहमान मेरा
रोज़ मेरे इस दिल पर
जैसे कोई रेल गुज़रती है ।।







4. रात

रात चुपचाप दबे पाँव चली आती है
कोई आहट है कहीं न ही आवाज़ कोई
अपने सीने में छुपाए हुए ये राज़ कोई
रात चुपचाप दबे पाँव चली जाती है
दिन बहुत शोर मचाता है, चिल्लाता है ।।







5. नज़्म

जब प्यार से मुझको देखती हो
तुम अपनी आँखों से जानाँ
इक नज़्म सी लिखती जाती हो
वो नज़्म भी ऐसी नज़्म कि जो
मुहताज नहीं है लफ़्ज़ों की ।।







6. नाराज़गी

मुझसे हर लम्हा रूठा रहता है
मेरा माज़ी नाराज़ था मुझसे
दिन के तेवर चढ़े से रहते हैं
रात मिलती है मुँह फुलाए हुए
सब यूँ कतरा के गुज़र जाते हैं
जैसे मानूस न थे मुझसे कभी
मैं तो खुद ही बुझा सा रहता हूँ
इन दिनों रूह उदास है मेरी
क्यों नहीं हँस के कभी मिल लेते
मैंने इन सब का क्या बिगाड़ा है ।।







7. नाम

सोचता हूँ तुझको कोई ख़ूबसूरत नाम दूँ
वो नाम जो तुझको भी
तेरे नाम से प्यारा लगे
तेरा सा हो, मेरा सा हो
लिखें कहें तो हमारा लगे
ऐसा ही कोई अच्छा सा नाम
ऐसा ही कोई प्यारा सा नाम
जो तुझपे जँचे जो मुझे जँचे
अपना सा हो कोई सपना सा हो
ऐसा कहीं तो कोई नाम होगा
कि लिखें अगर तो मेरा नाम हो
पुकारें अगर तो तेरा नाम हो ।।







8. इज़हारे-मुहब्बत

चूमकर पलकों को मेरी
हौले से तुम्हीं ने तो
खोल दी थीं मेरी आँखें
और फिर आँखों से अपनी
एकटक मुझे देखकर
कह डाली थीं, बेकहे ही
अनकही सी कितनी बातें
क्यों न फिर तुझको निहारूँ
क्यों न बस तुझको निहारूँ
मुज़महिल होंठों पे मेरे
रखकर अपने होंठ तूने
धीरे-धीरे कई तरह से
लिख दिया था अपना नाम
क्यों न फिर तुझको पुकारूँ
क्यों न बस तुझको पुकारूँ ।।







9. तन्हाई

मुझको तन्हा न कहो, मैं हूँ, मेरा ग़म है यहाँ
सर्द सन्नाटा है, वीराना है, सूनापन है
मेरी तन्हाई है, वो सब है जो अपनापन है
हम सभी मिल के यहाँ रोज़ यूँ बतियाते हैं
तेरे बारे में कई बातें किया करते हैं
और भी लोग कई हैं मेरी इस महफ़िल में
तेरी यादें भी बसी रहती हैं मेरे दिल में
मुझको तख़य्युल में हो जाती है तेरी क़ुरबत हासिल
तन्हा हो के भी मैं तन्हा नहीं रह पाता हूँ
मुझको तन्हा न कहो, मैं हूँ,मेरा ग़म है यहाँ
सर्द सन्नाटा है, वीराना है, सूनापन है
मेरी तन्हाई है, वो सब है जो अपनापन है ।।







10. चालाक

कितनी चालाक हो तुम
तुम्हें ख़ुद भी मालूम नहीं शायद
रोज़ भेज देती हो तुम सहेली को
मेरे नाम अपना एक ख़त देकर
रोज़ लिखती हो तुम, न आओगी
और फिर जब रात को
सारा शहर सो जाता है
तुम चली आती हो, चुपके से
सभी से छुप-छुपा के
चोरी-चोरी मेरे ख़्वाबों में
और पहरों बैठकर मेरे क़रीब
करती रहती हो सुबह तक
मद्धम, सुरीली सरगोशियों में
ढेरों प्यार की बातें ।।







11. एको प्वाइंट

एको प्वाइंट पे खड़ा हुआ मैं
नाम तुम्हारा ले लेकर
तुमको आवाज़ें देता हूँ
बार-बार आता है मुड़कर
नाम तुम्हारा मेरे पास
कितना अच्छा लगता है
कितनी उम्मीदें जगती हैं
शायद ऐसे ही इक रोज़
तुम भी लौट के आ जाओ ।।







12. तस्दीक़

माथे की लकीरों में
तहरीर तो कर दी थी
तक़दीर मेरी उसने
तस्दीक़ नहीं की थी
बन जाए मेरी क़िस्मत
गर अपने होंठों से
माथे पे मेरे जानाँ
इक मुहर लगा दो तुम ।।







13. दर्द

आओ कि फिर दर्द चुनें
आओ फिर आहें कहें
घोंटकर अपनी तमाम साँसों का दम
फिर तड़पती रूह की चीख़ें सुनें
फिर उठाएँ मुर्दा कन्धों पर जनाज़ा ज़िन्दगी का
फिर कुरेदें आँखें भरते ज़ख़्मों की
फिर किसी रिसते हुए ग़म को सहें
आओ फिर आहें कहें
आओ कि फिर दर्द चुनें
ज़ख़्मी लबों पर पोत कर ये सारा दर्द
आओ कि फिर आज कोई
दुखती हुई सी नज़्म कहें ।।







14. शाहकार

एक ताज़ा सफ़ेद कैनवस है
सुहागरात का ये नर्म बिस्तर
आओ अपने जिस्मों से
रच डालें इस पर
जाविदाँ मुहब्बत का
इक हसीन शाहकार ।।







15. यादें

फिर उठा है दर्द कोई सीने में
फिर कोई याद बन गई नश्तर
फिर चटख़नें लगीं रगें दिल की
फिर लगा उठने कोई तूफ़ान सा दिल में
यादें, कुछ इस तरह से हैं जुड़ीं दिल से
जैसे चुम्बक से चिपट जाती हैं सुईयाँ
एक-इक करके सभी
चुभती हैं कुछ ऐसे दिल में
कि दिल में दर्द ही दर्द का इक
सैलाब उमड़ पड़ता है
जीना तो यूँ भी कुछ आसान नहीं है
यादों पे जीना तो लेकिन वाक़ई दुश्वार है ।।







16. साँस

साँस लेना भी इक वहम है गोया
साँस लेने को ज़िन्दगी कहकर
हम हर साँस में
इक ताज़ा वहम पाल रहे हैं
हवा की थैलियाँ भरकर
हवा में फूँक भर देना
तो शायद ज़िन्दगी नहीं होती
फिर भी हम यूँ ही जिए जाते हैं
हर साँस में इक वहम पिए जाते हैं
आहों और चीख़ों के इस दर्दनाक अन्धड़ में
साँस पर साँस लिए जाते हैं
डरते हैं ये वहम मर न जाए कहीं ।।







17. अमृत वेला

दूर कहीं घड़ियाल सुबह के चार बजाकर
घँटे भर को फिर से आँखें मूँद गया था
चौकीदार की विह्सल कभी लाठी की ठकठक
गूँज रही थी कॉलोनी में
अमृत वेले का नोटिस देकर
डूब गया था गुरुद्वारे का लाऊड स्पीकर
चाँद का पहरा ख़त्म हुआ था
करवट बदल के ओढ़ लिया था
उसने भी बादल का कम्बल
आँखों-आँखों में ही सारी रात कटी थी
ख़्वाब था कोई जिसके पीछे भाग रहा था
गहरी नींद में रात पड़ी थी
मैं बिस्तर पर जाग रहा था ।।







18. शायर

वो सँजीदा सा आदमी
जो उस बैंच पे तन्हा बैठा है
उसकी कोई पहचान नहीं
वो उर्दू का इक शायर है
मैं सोच रहा हूँ वो भी गर
अश्लील मगर अँग्रेज़ी में
दो-चार किताबें लिख देता
तो हाथों-हाथ बिका होता ।।







19. एहसास

जब तुम साथ होती हो
और जब तुम साथ नहीं होती
दोनों ही वक्त मुझे कुछ ऐसा लगता है
जैसे मेरा अपना वजूद कहीं है ही नहीं
ख़ुद को कहीं रखकर जैसे भूल गया हूँ मैं
ये जो मैं हूँ, ये मैं नहीं हूँ
ये जो तू है, इसमें इक झलक है मेरी
शायद यही मैं हूँ
मगर फिर तू कहाँ है
ये अपने ही न होने का एहसास क्या है
इस ख़ूबसूरत एहसास का नाम क्या है
या नाम शायद कोई है ही नहीं इसका
सिर्फ़ इक एहसास है ये ख़ूबसूरत..... ख़ूबसूरत ।।







20. सूरज-1

गोरे-चिट्टे जवान सूरज को
सुबह से छुप के तक रही थी रात
घर को जाते हुए ही रस्ते में
पकड़ के, खींचकर अन्दर
किवाड़ बन्द किए, और चढ़ा कर साँकल
रात मुस्का रही थी हौले से
दूर बादल की ओट में छुपकर
देखता जाता था और रोता था चाँद ।।







21. सूरज-2

सूरज रोज़ निगल जाती है
भुक्खड़, काली हब्शन रात
चबा-चबाकर, चूस-चूस कर
काट-काट दाँतों से उसको
पेट भरे पर बेरहमी से
रोज़ उगल देती है बाहर
इक पीला मरियल सा चाँद ।।







22. सूरज-3

रोज़ देखता हूँ सूरज को
रोज़ सोचता हूँ कि पूछूँ
इससे कैसी ख़ता हुई है
कौन ख़फ़ा है इससे इतना
कौन है जो इस बेरहमी से
इसके जिस्म पे तेल छिड़क कर
रोज़ ही आग लगा देता है ।।







23. सूरज-4

इक कपूर की टिकिया बाल के
रख जाती है रात रोज़ ही आँगन में
सारा दिन जलती है टिकिया
ख़ूब उजाला होता है
रात लौटती है लेकिन जब
तब तक टिकिया बुझ जाती है
रोज़ रात के हिस्से में बस
एक अन्धेरा आता है
सदियों से बस यही तमाशा
यूँ ही होता आया है ।।







24. सूरज-5

अपने हाथों में उठाए
आग का गोला कोई
सुबह से बस बेतहाशा
भागता जाता ये दिन
जब कहीं जलकर मरेगा
दूर साहिल के क़रीब
तब सुलगती शाम अपने आप ही
हल्के-हल्के, धीरे-धीरे रात को बुझ जाएगी ।।







25. सूरज-6

सुबह-सुबह बन ठन के सूरज
रात को मिलने निकला था
बहुत नाज़ था उसको
अपने सुन्दर रूप रुपहले पर
दिन भर भटक-भटक कर तन्हा
थक कर चेहरा सुर्ख़ हो गया
शाम ढले ही दूर उफ़क़ पर
सूरज जल कर राख़ हुआ था
कहते हैं उस रोज़ बहुत ही
रोई थी बेचारी रात
और ज़मीं पर सबने सुबह
रात के आँसू बिखरे देखे ।।







26. सूरज-7

बेतहाशा भाग रहा था चोर की मानिन्द सूरज
साँस फूली हुई, घबराया, बौखलाया हुआ
जलता हुआ, पिघलता हुआ, घुलता हुआ पल-पल
सुबह से बस भाग रहा था बेतहाशा
जैसे रात किसी का कुछ चुरा लाया हो
दूर ले जा के उफ़क़ के पार
किसी ने क़त्ल कर दिया है उसे
लहू से रँग गई है सारी चादर
ओढ़े रहता था जिसे वो बेचारा
ख़ैर, अब रोओ नहीं, सब्र करो
रात का क़फ़न ओढ़ा दो इसको
दफ़न कर दो ये लाश
सुबह होगी तो फिर कोई नया सूरज जन्म लेगा
या फिर इसी का कोई बेटा
ड्यूटी पर आएगा कल से ।।







27. सूरज-8

कल का सूरज डूबने के बाद
आज का सूरज डूबने से पहले
तुमसे फिर से मिलने के मेरे वादे को
पूरा करने के लिए ही
उगा है आज का ये सूरज
आज का सूरज कितना ख़ूबसूरत है ।।







28. साँईंसदाँ

किसी साँईंसदाँ की तरह
जब मेरा चेहरा पढ़ती हो तुम
मेरे अन्दर दूर तलक
उतर जाती हैं तुम्हारी ख़ुर्दबीं आँखें
मेरी हर इक सोच खोल कर
पढ़ लेती हो मुझको तुम
मेरी रग-रग से वाक़िफ़ हो
मेरे हर इक मूड को अब तुम
अच्छे से पहचानती हो
मैं नादां हूँ, हैरां होकर मेरी आँखें
तुम्हारी सूरत पर ही आकर
टिक जाती हैं, थम जाती हैं
तुम भी अपने बारे में कभी
मुझको कुछ बतलाओ ना ।।







29. फ़लक

ये फ़लक इक गैस का गुब्बारा है
और ये सूरज है आग का गोला
जब तलक आग जलती रहती है
उड़ता रहता है तन के गुब्बारा
और फिर जब शाम को
बुझ जाता है सूरज
आन पड़ता है ज़मीं पर
पिचक कर सारा फ़लक
रात हो जाती फिर
रात ज़मीं पर ।।







30. ग़ुस्सा

कोई भी बात मत पूछो
कि बातों से
कई बातें निकलती हैं
लबों से पोंछ डालो
कड़वे-कड़वे सारे शिकवों को
ज़ुबाँ से तल्ख़ लहजा झाड़ कर फेंको
कहो आँखों से कि
अब न गर्म लावा फूटने पाए
ज़रा सा मुस्कुरा दो
और गले से लग जाओ मेरे
तुम्हारे चेहरे पर ग़ुस्सा
ज़रा अच्छा नहीं लगता ।।







31. धूप

हरे पेड़ों के जँगल में
जब धूप की बारिश होती है
पत्ते अपने जिस्म बिछाकर
रोक तो लेते हैं वो बारिश
पड़ जाते हैं फिर भी लेकिन
ज़मीं के जिस्म पर
कुछ छोटे सफ़ेद धूप के छींटे ।।







32. तारे

बचपन में जब माँ से पूछा
रात के पास ये तारे कहाँ से आए हैं
माँ बोली, कि इक दिन बेटा
सूरज जब थक कर लौटा तो
उसने देखा
रात बड़ी ही गहरी नींद में पड़ी हुई है
उसे जगाने को ही बेटा
रात के मुँह पर सूरज ने
कुछ धूप के छींटे मारे थे ।।







33. पूरनमासी

आज पूरा चाँद आने वाला था
सुबह से ही सज सँवर रही थी
तभी
कितनी गोरी-चिट्टी
हाय लग रही है रात ।।







34. मिरचें

आँख में टूटे काँच की चुभती किरचें हैं
या फिर शायद दर्द भरी कुछ मिरचें हैं
मत रगड़ो न मलो आँख को
दर्द बढ़ेगा कम न होगा
खुल कर रो लोगे गर लेकिन
सारा दर्द निकल जाएगा
अश्कों की मरहम मलने से
ज़ख़्म मिर्च के मिट जाएँगे
अश्कों की इस नर्म आँच से
काँच आँख का जुड़ जाएगा ।।







35. सुबह

रात के मुँह से काली चादर
धीरे-धीरे सिमट रही है
तारे अपने दीए बुझाकर
सोने की तैयारी में हैं
चिड़ियाँ चहक रही हैं फिर भी
इन आँखों में नींद भरी है
रात देर से सोई शायद
गहरी नींद में पड़ी हुई है
और सबा ने सरगोशी में
सोई सुबह के कानों में
बस इतनी सी बात कही है
सूरज भैया आने को है
जब आया तो डाँट पड़ेगी
मुँदी-मुँदी अलसाई आँखें
मलती सुबह जाग उठी है ।।







36. बिज़ी

बहुत बजा है गिला तुम्हारा
अब मैं तुमसे कम मिलता हूँ
और मेरा मोबाइल
अक्सर बिज़ी टोन देता रहता है
क्या बतलाऊँ यार कि
मुझसे मिलना अब कितना मुश्किल है
अब मैं ख़ुद भी ख़ुद को
अपनी वेबसाइट पर मिलता हूँ ।।







37. सियासतदाँ

दिन की नँगी पीठ पे
कोड़े बरसाती इस धूप का क्या
जब आकाश में बादल होंगे
चोरी-चोरी खिसियानी सी
झाँकेगी ये धूप कहीं से
ढूँढ ही लेगी एक बहाना
दिन से हाथ मिलाने को
इसकी चाल से बचकर रहना
धूप सियासतदाँ है कोई ।।







38. दिन

बुझा-बुझा सा रूठा-रूठा
अलसाया बेकार सा दिन
ख़ाली-ख़ाली तन्हा-तन्हा
जैसे-तैसे काट लिया है
शाम को जब मैं घर लौटूँगा
बीवी की तस्वीर कहेगी
देर-देर तक बाहर रहना
इस सर्दी में ठीक नहीं है
मुझको रात से डर लगता है
तन्हा काटे नहीं कटेगी ।।







39. प्यार

सूरज जब तक ठँडा हो
और चाँद में आग लगे
इक-इक तारा पक कर
जब तक तश्त-ए-ज़मीं पर आन गिरे
ख़ुश्क समन्दर हो जाए जब
और ज़मीं ये रेज़ा-रेज़ा
होकर कहीं बिखर जाए
कायनात की गर्दिश जब तक
थक कर कहीं ठहर जाए
तब तक प्यार करूँगा तुझसे
तब तक तुझसे प्यार करूँगा ।।







40. ज़ख़्म

जिस्म में ज़ेहन में कभी रूह में
दफ़्न होते हैं दर्द कितने ही
सोए रहते हैं बरसों-सदियों तक
जब तलक उनको फिर जगाओ न
तुम मेरे ज़ख़्म यूँ कुरेदो मत
सोए सब दर्द जाग जाएँगे
साँस लेगी अगर खरोंच कोई
बरसों-सदियों से दफ़्न ये मुर्दे
ज़िन्दा हो जाएँगे सभी फिर से
तुम मेरे ज़ख़्म यूँ कुरेदो मत
मेरे दर्दों को दफ़्न रहने दो ।।







41. रूहें

दो रूहें, दो बिछुड़ी रूहें
प्यासी रूहें, तरसी रूहें
अपने मधुर मिलन की ख़ातिर
ढूँढ रही हैं एक बहाना
एक ज़रिया ढूँढ रही हैं
और हमारे ये दो जिस्म
तपते जिस्म, धधकते जिस्म
घुलते जिस्म, पिघलते जिस्म
जलते होंठ, सुलगती साँसें
काँपते हाथ, हाँपती बाँहें
इक दूजे में कुछ खोकर
कुछ ढूँढ रहे हैं
जज़्बों की इस आग में जलकर
दोनों हो जाएँगे राख
दो रूहों के मेल की ख़ातिर
दो जिस्मों को जलना होगा ।।







42. घोड़ा

रोज़ सुबह कस दी जाती है ज़ीन मेरी
रोज़ ज़रूरत का इक चाबुक पड़ता है
रोज़ भागता हूँ मैं सरपट सारा दिन
रोज़ शाम को थक कर घर आ जाता हूँ
है लगाम मेरी इस घर के हाथों में
मैं इस घर का एक कमाऊ घोड़ा हूँ ।।







43. वक़्त

वक़्त के हाथों में देकर फूल जैसी ज़िन्दगी
दुख बहुत पाए मगर कोई शिकायत की नहीं
जिस तरह चाहा लताड़ा वक़्त ने मुझको मगर
वक़्त से झगड़ा करूँ इतनी मुझे फ़ुरसत नहीं
ये नहीं कि वक़्त से कुछ भी नहीं कहना मुझे
वक़्त मिलने पर करूँगा वक़्त से बातें कभी ।।







44. कैनवस

ज़िन्दगी के कैनवस पर
कुछ लकीरें खींच कर
रँग भर के उनमें
अपने ख़्वाब से ज़्यादा हसीं
सोचता था मैं बनाऊँ
एक ऐसा शाहकार
जिसमें सारे ख़्वाब मेरे
सज सकें तरतीब से
देखकर जिसको हक़ीक़त का गुमाँ होने लगे
सोचते ही सोचते ये मेरे हाथों से मगर
छूटी रँगों की पैल्लेट
और छिटक कर रँग सारे
ज़िन्दगी के कैनवस पर
इस क़दर जाकर गिरे
कि आज बेतरतीब है
मेरी ये सारी ज़िन्दगी ।।







45. चकमक

चकमक पत्थर के दो टुकड़े
आपस में गर रगड़े जाएँ
आग निकलती है उनमें से
चकमक पत्थर के दो टुकड़ों
जैसे हैं ये जिस्म हमारे
एक ज़रा सी छुअन
ज़रा सा लम्स मिला तो
ऐसी आग लगेगी इनमें
हम दोनों को राख करेगी
जिस्म की आग बड़ी ज़ालिम है ।।







46. कुड़ियाँ

नन्ही-नन्ही प्यारी-प्यारी
इक-इक करके बारी-बारी
और कभी सारी की सारी
फूलों जैसी कलियों जैसी
ये मिसरी की डलियों जैसी
ये इमली की फलियों जैसी
मोम की छोटी-छोटी गुड़ियाँ
भोली-भाली नाज़ुक चिड़ियाँ
जादू की अनखोली पुड़ियाँ
सीधी-सादी मीठी कुड़ियाँ
जाने कब बम बन जाती हैं ।।







47. चाँद

दिल पर ग़म की गर्द लिए
फीका चेहरा ज़र्द लिए
सीने में इक दर्द लिए
सदियों से गुमसुम बैठा है
किसी ख़ुशी की उँगली पकड़े
नाचे कूदे गाए खेले
ज़ोर-ज़ोर से हँसे नहीं तो
किसी बात पर खुल कर रो ले
कुछ भी करके किसी जतन से
ग़म के घर से बाहर निकले
सदियों से गुमसुम बैठा ये चाँद
अगर फ़ेशियल करवा ले
चेहरे की झाईयाँ हटवा ले
सूरज क्या है इसके आगे
मेरा चाँद बहुत सुन्दर है ।।







48. जिस्म

थपकी देकर सुला रहे थे
हम दोनों ही दो जिस्मों को
पर जिस्मों को भूख लगी थी
भूखे पेट नींद क्या आती
फिर हम दोनों ने ही मिलकर
दो जिस्मों का आटा गूँधा
जिस्म का चूल्हा, जिस्म का ईंधन
जिस्म की आग बाल कर हमने
दो जिस्मों की भूख मिटाई
भूख जिस्म की जिस्म से ही मिट सकती थी ।।







49. दिन

रात से दिन का छुट्टा माँगा
लम्हों की इक गठरी भर कर
एक मुसाफ़िर सुबह महवे-सफ़र हुआ
इक-इक लम्हा लेता था वो
आगे चलता जाता था
कहीं मिनट तो किसी जगह पर
इक-दो घन्टे ख़र्च हुए
घन्टे-मिनट भुनाता आख़िर
शाम ढली तो थका मुसाफ़िर बैठ गया
बहुत टटोला सारी गठरी ख़ाली थी
दिन ख़त्म हुआ
सौ का नोट तुड़ाया था सब ख़र्च हुआ ।।







50. सीवर

तागा-तागा गाँठ दर्द की खोली तो
देखा कुछ साँसों के गुच्छे
हर इक रग में फँसे हुए हैं
लम्बी आह भरो या चीख़ो
कुछ भी करके किसी जतन से
दिल का सीवर साफ़ करो
बहुत दिनों से गन्दा पानी
आँखों के रस्ते से रिस कर
चेहरे की दीवार का नुक्साँ करता है ।।







51. तकिया

जानती हो जब तुम नहीं होतीं
सर्द रातों को तन्हा बिस्तर पर
मेरी बाहों में कसे तकिए की
कितनी बुरी हालत होती है
मेरे लिए नहीं, न आओ
इस तकिए पर तो रहम करो कुछ
इस पर ही कुछ तरस तो खाओ
ज़िन्दगी भर तुमको ज़िन्दगी की दुआ
देता रहेगा ये मज़लूम ।।







52. याद

एक नन्हें दर्द की पकड़े हुए उँगली
कल अचानक आ गई थी उसकी याद
देर तक बैठी थी, बतियाती रही
मैं बिज़ी था, फिर भी
उसके साथ बतियाता रहा, हँसता रहा
रात भर वो याद मेरे ज़ेहन में छाई रही
दर्द भी दिल में कहीं चुपचाप सा लेटा रहा
देर से सोकर उठा हूँ आज मैं
सब कहीं ख़ून-ख़ून बिखरा है
मेरी आँखों में लाल डोरे हैं
दिल लहूलुहान है, चीख़-चीख़ पड़ता है
रूह ज़ख्मी है और तड़पती है
ज़ेहन के भी जिस्म पर अनगिनत खरोंचें हैं
मुझसे बदला ले लिया है दोनों ने
याद ने नाख़ून पाल रखे थे
दर्द के भी मुँह में उग आए थे दाँत ।।







53. लफ़्ज़तराश

इक-इक हर्फ़ चुना करता हूँ
फिर मैं लफ़्ज़ बुना करता हूँ
कुछ लफ़्ज़ों से मानी लेकर
कुछ लफ़्ज़ों से पानी लेकर
कुछ लफ़्ज़ों को सीमेंट करके
क़द और वज़न देखकर उनका
कहीं छील कर कहीं काट कर
इक पर इक रखता जाता हूँ
लफ़्ज़ों के इस पिरामिड पर
सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता हूँ
इनमें कुछ जज़्बात समो के
अपने एहसासात पिरो के
ग़ज़लें और नज़्में घड़ता हूँ
मैं तो बस इक लफ़्ज़तराश हूँ
लोग मुझे शायर कहते हैं ।।







54. गुड्डो

नज़्म लिखने बैठता हूँ
तो मेरी छोटी बच्ची
पास आकर शिकायत करती है
पापा आज ना, मम्मी ने मुझे डाँटा है
मेरी गुड़िया के मुँह पे भैया ने
देखो मूँछें बना के रख दी हैं
मेरा एरोप्लेन भी पापा
आज गिर कर टूट गया
मेरी बच्ची ने किस नासमझी से
तोड़ डाली है मेरी ये सारी नज़्म
ज़ेहन में बिखर गए हैं सब तरफ़
छोटे-छोटे से नज़्म के टुकड़े
सोच पर सोच चढ़ के बैठी है
लफ़्ज़-लफ़्ज़ अजनबी सा लगता है
मम्मी और भैया को पापा डाँटेंगे
मेरी गुड्डो के लिए
नया एरोप्लेन भी आ जाएगा
काश ये टुकड़े-टुकड़े नज़्म
फिर से जुड़ पाती ।।







55. नाबीना

दकियानूसी ज़ेहनों का अम्बार लगा है मेरे गिर्द
ज़ँग लगी सोचों के मालिक
अपने-अपने वहम उठाकर
नाबीना-से भाग रहे हैं
सोच रहा हूँ
बाईबल का कोई वर्स पढ़ूँ
और मैं इक सूरज रौशन कर दूँ ।।







56. एक्सीडेंट

जज़्बात की बस्ती में
इक एक्सीडेंट हुआ है आज
फ़रैक्चर हो गया है इक रिश्ता
दूर कहीं दिल के गहरे में दर्द हुआ है
ज़ुबाँ ख़ामोश है, लब चुप हैं, लफ़्ज़ ग़ायब हैं
कहने को कुछ बचा नहीं है
टूटती-जुड़ती हुई इक उम्मीद के साथ
देख रहे हैं लेकिन दो अल्फ़ाज़ तुम्हारी आँखों के ।।







57. रिश्ता

बैसाखी पर झूल रहा था
इक लँगड़ा-लूला सा रिश्ता
जब से ये बीमार हुआ था
क्या-क्या जतन नहीं कर डाले
दारू-पट्टी कर के देखा
राय मशविरा भी कर देखा
राज़ी होना था उसको न हुआ
उम्मीद जैसी शै थी कोई
जो कि मरती ही नहीं थी
बरसों ढोता रहा उसे मैं
ज़ेहन के ज़ख़्मी काँधों पर
लम्बी बीमारी में लोग
सुना है अक्सर मर जाते हैं
इक दिन ये रिश्ता भी आख़िर फ़ौत हुआ ।।







58. अश्क

दिल में रखा इन्हें
आँखों में बसाया मैंने
दोस्त समझा इन्हें
पलकों पे बिठाया मैंने
दिल के दरवाज़े पे इक दिन
ग़म ने जो दस्तक सी कर दी
मेरा ग़म जा के ज़माने को बताया है
ख़ुद भी रोए हैं बहुत
दिल को भी रुलाया है
ये मेरे अश्क
मेरे दिल के बड़े दुश्मन हैं
दोस्त होते तो मेरे दिल को दिलासा देते ।।







59. सच

कहते हैं
इस शहर से दूर
बहुत दूर
कहीं कोई बस्ती है
जहाँ इन्सान रहते हैं
लगता नहीं मगर फिर भी
काश! कहीं ये सच ही हो ।।







60. सुकून

अभी तो आई हो
और कह रही हो जाना है
ज़रा सा बैठो तो
कुछ दिल की बात ही कर लें
तुम्हें भी मुझसे कुछ तो कहना था
मुझे भी तुमसे कुछ तो कहना है
तुम भी ये सोचती हो कैसे कहूँ
मैं भी ये सोचता हूँ कैसे कहूँ
मुझको बस तुमसे इतना कहना है
तुम्हारे आने से दिल को सुकून मिलता है
ज़रा सा बैठो तो, चले जाना
तुमको देखा नहीं है जी भर के ।।







61. वबाएँ

फ़र्क़ नहीं करती ये हिन्दू-मुस्लिम में
ज़ात-पात की भी कोई परवाह नहीं
बच्चे-बूढ़े, औरत-मर्द, गोरे-काले
बेदौलत या दौलत वाले
सब इन के लिए बराबर हैं
यकसाँ मिलती हैं ये सब से
सचमुच सच्ची सैकुलर हैं ये
इन वबाओं का कोई मज़हब नहीं होता ।।







62. मक्खी

इस मक्खी को देखा तुमने
कितनी शरीर है
पहले मेरे गिर्द इक चक्कर सा काटती है
फिर जाकर तुम्हारे गाल पर बैठ जाती है
फिर वहाँ से उड़कर
तुम्हारे आस-पास इक चक्कर सा काटती है
और आकर मेरे होंठों पर बैठ जाती है
कितनी शरीर है ये मक्खी, देखा तुमने
मगर सोचो तो, समझदार भी कितनी है ।।







63. दिले-मुन्तज़िर

तेरी सहेलियों से
कभी अपने दोस्तों से
मिल तो जाती है मुझे तेरी ख़बर
ख़त भी तेरे यूँ तो दे जाता है डाकिया
मेरी उदास सोच का कन्धा झिंझोड़कर
हँसता हुआ आता है तेरी याद का चेहरा
और कभी, सोते में, चुपके से
कहीं से मुस्कराते, हाँ, चले आते हैं तेरे ख़्वाब भी
ये सब यही कहते हैं मुझसे
ठीक हो तुम, अच्छी हो, बहुत ख़ुश हो
और मुझको याद भी करती हो तुम
ये सब कुछ ठीक ही होगा मगर
इन झूठी तसल्लियों से
बहलता नहीं है दिले-मुन्तज़िर
कभी तुम जो आओ तो कुछ बात हो
तुम्हें आए यूँ भी बहुत दिन हुए ।।







64. अल्फ़ाज़

अक्सर मेरे ज़ेहन में
जब अल्फ़ाज़ का जमघट लगता है
मैं खोल के ज़ेहन के पिंजरे को
और ओक में भरकर लफ़्ज़ों को
आसमान के आँगन में
उछाल दिया करता हूँ बस
बच्चों की तरह ख़ुश हो हो कर
फिर उनको देखता रहता हूँ
आज़ाद परिंदों की तरह
वो उड़ते-फिरते रहते हैं
फिर धीरे-धीरे आकर सब
काग़ज़ पर बैठने लगते हैं
और इसी तरह बस ख़ुद-ब-ख़ुद
इक नज़्म सी बनती जाती है ।।







65. मुन्तज़िर

मैं ज़िन्दगी के हर उस मोड़ से
यूँ ही गुज़र जाता
गर तुमने ये वादा न किया होता
कि उस मोड़ पर मिलोगी तुम
जिस मोड़ पर खड़ा हूँ मैं
सदियों से
तुम्हारा मुन्तज़िर तन्हा ।।







66. आँखें

मुझे बाँधकर टकटकी यूँ न देखो
नज़र से तुम्हारी
जो गिरते हैं अल्फ़ाज़
उनको उठाकर फ़साने बनाएँगे
ये लोग ज़ालिम हैं
बातों ही बातों में
रुसवा करेंगे मुहब्बत हमारी
इनसे कहो थोड़ा ख़ामोश बैठें
बहुत बोलती हैं ये आँखें तुम्हारी ।।







67. मुसव्विर

आस्माँ के वसीअ कैनवस पर
चमचमाती
एक बस चाँदी की टिक्की
इक मुसव्विर मुत्मइन
इक मुकम्मल शाहकार ।।







68. क़वायद

रात भर चाँद सितारों को क़तारों में खड़ा करता है
रात भर कोई सितारा नहीं होता है क़तारों में खड़ा
रात भर सारे सितारे किसी साज़िश के तहत
चाँद के हुक्म की तामील नहीं करते हैं
छोटे-छोटे से गिरोहों में खड़े होकर वो
ख़ूब कसते हैं चाँद पर फ़िक़रे
लाख कहने पे कभी एक नहीं सुनते हैं
शब के आँगन में ख़ुराफ़ात मचाते हुए
नटखट ये स्कूली बच्चे
चाँद नाराज़ नहीं है, उसको
इनकी मासूम शरारत भी भली लगती है
फिर अचानक अपने ऑफिस की खिड़की से
झाँकता है सूरज
हाथ में चमचमाती हुई किरनों का
इक लिए चाबुक
सब के सब सहम के छुप जाते हैं
दुबके हुए कोनों में कहीं
जैसे इतने बड़े आँगन में कोई था ही नहीं
हाँ बहुत होते हैं हम में ही बशर ऐसे भी
जिनको बच्चों की शरारत भी बुरी लगती है ।।







69. अख़बार

असम में तीन सौ अफ़राद हलाक
दहशतगर्द फिर से सरगर्म
सैलाब से हज़ारों बेघर
सैंकड़ों गाँव डूबे
कलिन्टन का नया सेक्स स्कैंडल
बम्बई में बम के धमाके
विधवा से थाने में बलात्कार
आशिक़ के साथ मिलकर
बीवी ने किया शौहर का ख़ून
ग़रीबी से तँग परिवार ने ख़ुदकुशी की
एक और दुल्हन चढ़ी दहेज की बलि
माँ-बेटी को नँगा कर गाँव में घुमाया
तीन साल की बच्ची के साथ मुँह काला
आज का अख़बार कितना बोरिंग है
बस वही रोज़मर्रा की ख़बरें
सनसनीख़ेज़ तो अब कुछ कहीं नहीं होता ।।







70. तफ़रीह

रात कल देर तक पीते रहे
पुराने दोस्तों की महफ़िल थी
नौ बजे सोकर उठा हूँ आज मैं
फिर यूँ ही अख़बार लेकर धूप में बैठा रहा
आज दफ़्तर का भी कोई मन नहीं
चाय पी, फिर लँच करके सो रहा
सोफ़े पर सोने का अपना लुत्फ़ है
पाँच बजने को हैं थोड़ी सैर करनी चाहिए
ज़्यादा वरजिश से बिगड़ जाता है बी पी एकदम
बीवी की आवाज़ आकर लॉन में
कुछ डाँटती-सी कहती है
"आज सुबह से नहाए नहीं हो
याद नहीं शाम को पार्टी में जाना है"
उफ़! बड़ी तेज़ रफ़्तार है ज़िन्दगी की
गुज़रता है दिन कितनी मुश्किल से लेकिन ।।







71. ग्रह-चक्कर

यही कहते सुना है सबको अक्सर
ख़ताएँ माफ़ कर दे जो वही सबसे बड़ा है
और अनजाने में हुई ग़लती तो
माफ़ी के क़ाबिल भी है
फिर क्यों ये राहू और ये केतू
फिर क्यों ये मँगल और शनि
इस धरती के इन्सानों से
हर वक्त ख़फ़ा ही रहते हैं
ये माना पिछले जन्मों में
हमने भी ख़ताएँ की होंगी
पर उनके बारे में हमको
इस जन्म में कुछ भी याद नहीं
और सज़ा का मक़सद होता है
कि दोबारा वो ख़ता न हो
जब ख़ता का ही कुछ पता नहीं
तो फिर ये सज़ा बजा है क्या
पँडित जी का फ़रमान है कि
गर इनके कोप से बचना है
तो इनके नाम से हर हफ़्ते
मन्दिर में एक चढ़ावा दो
ग़ज़ब इन्साफ़ है इनका अजब है मुन्सिफ़ी इनकी
ये कोई देवता हैं या ख़ुदा ने गुन्डे पाले हैं
कोई इल्ज़ाम लगता है न कोई बात सुनते हैं
ये हफ़्ताखोर गुन्डे बिन बताए आ धमकते हैं





नहीं दोगे तो फिर ये ज़िन्दगी दुश्वार कर देंगे
रायगाँ है इनके आगे हर दलील अपनी
ये साहूकार का क़र्ज़ है और ये खाता ख़त्म नहीं होता
इन सज़ाओं से कोई वारस्तगी मुमकिन नहीं ।।







72. सय्यारे

नूर सदियाँ बीत जाती हैं हमें बिछुड़े हुए
फ़ासले जो दरमियाँ हैं कम नहीं होते कभी
पिछली बार जब मेरी सतह को छू कर
बड़े क़रीब से गुज़री थी तू
इक ज़लज़ला मेरी ज़मीं पर देर तक बरपा रहा
कँपकँपाता है अभी तक मेरा ये सारा वजूद
देर-पा इक दर्द है अब तक रगों में बैठा है
दर्द-ए-फ़ुरक़त मुझसे अब बरदाश्त होता ही नहीं
अब के जब आओ तो मेरी सतह को छूकर
मेरे क़रीब से ही मत गुज़र जाना
मुझसे टकराना मुझे फ़नाह कर देना
नहीं तो तेरी जानिब दौड़कर मैं नूर की रफ़्तार से
तेरे मिकनातीसी वजूद की सारी हदों को तोड़कर
तेरे ब्लैक होल में ही ग़र्क़ हो जाऊँगा बस ।।







73. मिलन

उस रात जब अँधियारे में
हम दोनों ही हम दोनों थे
परछाईंयाँ भी साथ नहीं थीं
उस दूधिया बिस्तर पर तब
वो जो एक लम्हा गुज़रा था
जिस लम्हे में मैं भी नहीं था
जिस लम्हे में तू भी नहीं थी
बस सोंधी-सोंधी ख़ुश्बू थी
आह! वो लम्हा, कितना हसीं लम्हा गुज़रा था
आओ कि इक बार आज फिर
उसी हसीं लम्हे से गुज़रें
फिर से भूलें हम अपने को
फिर उस लम्हे में खो जाएँ
खोकर उसी हसीं लम्हे में
ख़ुद को इक दूजे में ढूँढें
साँसों से देकर आवाज़ें
अपने-अपने नामों से फिर
इक-दूजे का नाम पुकारें
आओ कि इक बार गुज़ारें
फिर से हम दोनों वो लम्हा ।।







74. सोच

जिस तरह कोई मुसव्विर
सामने अपने बिठा के मॉडल को
कैनवस पर उतार लेता है
तस्वीर उसकी हू-ब-हू
मैं भी अपने ज़ेहन में उभरी
किसी सोच का हाथ पकड़ कर
बिठा लेता हूँ अपने सामने
और देखकर हर ज़ाविए से
सोचता हूँ नज़्म कोई तख़लीक़ करूँ
पर सोच तो आख़िर सोच ही ठहरी
पल-पल रूप बदलती है
मुख़्तलिफ़ शक्लों में मिलती है मुझे
और इससे पहले कि लफ़्ज़ कोई काग़ज़ पर उतरे
शक्ल कोई दूसरी ही कर लेती है इख़्तियार
कभी हर नक्श उसका साफ़ दिखता है मुझे
कभी मध्दम सी मुबहम सी दिखाई देती है
और कभी पूरी की पूरी उड़ ही जाती है ख़ला में
लाख कोशिश पर भी वो लफ़्ज़ों में बँधती ही नहीं
कशमकश रहती है जारी नज़्म बनती ही नहीं ।।







75. नदी

बड़ी अठखेलियाँ करती गुज़रती है
पहाड़ों की ढलानों से नदी ये
झूमती गाती सी इठलाती हुई
मदमस्त चँचल छोकरी जैसी
ज़रा सी कुछ बड़ी होगी तो
यूँ चुपचाप गुज़रेगी मैदानों से
कि जैसे कोई दोशीज़ा सँभाले अपने यौवन को
गुज़र जाती है लोगों में
मिलेगी जब समन्दर से तो यूँ
देगी वजूद अपना कि उसमें घुल ही जाएगी
उसी की हो रहेगी यूँ कि मायका भूल जाएगी
अच्छे घरों की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं ।।







76. बेटा

मेरी नई कमीज़ें और कभी जूते
अब अक्सर ग़ायब हो जाते हैं
फ़्रेंच परफ़्यूम की शीशी भी
अब अपनी जगह नहीं मिलती
गाड़ी भी अब शामों को
गैराज में कम ही दिखती है
अब मुझको मालूम हुआ है
मेरा बेटा जवाँ हो गया ।।

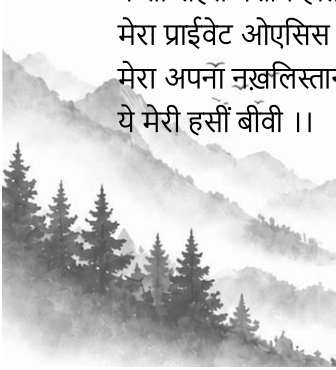






77. बीवी-1

ज़िन्दगी के तवील-ओ-तन्हा
मुसलसल सफ़र में
घनेरे जँगलों से, दलदलों से,
ऊँची-ऊँची चोटियों से
कँटीले, ख़ुश्क सहराओं की तपती रेत से
होकर गुज़रता मैं शिकस्ता ज़ेहन-ओ-जिस्म
जब कभी थक कर
नहीं इक भी क़दम चल पाता हूँ
बस उसकी इक झलक से
इक नई उम्मीद बँधती है
मैं ज़ानों पे गिरा भर ओक
पीता हूँ उसकी झील का पानी
फिर उसमें तैर कर कुछ पल तरो-ताज़ा निकलता हूँ
और उसके साहिलों पे रख के सर मैं सो भी लेता हूँ
ज़िन्दगी की चिलचिलाती धूप से
मुझको बचाने के लिए
तान देती है मेरे चेहरे पे वो,
अपनी ज़ुल्फ़ों की खजूरों के घने साए
दिल को कितना सुकून मिलता है
कैसी राहत नसीब होती है
मेरा प्राईवेट ओएसिस है
मेरा अपना नख़लिस्तान
ये मेरी हसीं बीवी ।।







78. बीवी-2

बहुत दिनों से मेरा कमरा मुझसे बात नहीं करता है
दीवारों के चेहरों पर अब पहले सी रौनक़ भी नहीं है
दरवाज़े भी पीठ फिराकर बस यूँ ही चुपचाप खड़े हैं
छत पर लगा हुआ पँखा अब कोई गीत नहीं गाता है
मेज़ कुर्सियाँ सोफ़ा सेट भी उकताए-उकताए से हैं
और वहाँ कोने में टीवी बैठे-बैठे ऊँघ रहा है
अलमारी में लटके कपड़े बस फाँसी पर झूल रहे हैं
ड्रैसिंग टेबल का आईना मुझको मुँह चिढ़ाता है
तुम जिस दिन से यहाँ नहीं हो हर कोई गुमसुम-गुमसुम है
एक उदासी का आलम है इक ठँडा सन्नाटा है
सब के सब ख़ामोश हैं जैसे कोई साज़िश रची गई हो
मेरे साथ नहीं बोलेंगे जब तक कि तुम लौट न आओ ।।







79. ज़िन्दगी और मौत

ज़िन्दगी और मौत दोनों ही खड़ी हैं सामने
ज़िन्दगी में दुख ही दुख हैं
दर्द भी, आँसू भी हैं
मौत में वारस्तगी है ज़िन्दगी के दर्द से
मौत राहत है, सुकूँ है, चैन है
फिर भी मेरी राय है तुम ज़िन्दगी चुनो ।।





80. मुझसे इक नज़्म का वादा है

वो ख़्यालों में मेरे आज दिखेगी मुझको
कभी अपनी तो कभी ग़ैर लगेगी मुझको
मैं उसे जिस्म समझकर जो ज़रा छू लूँगा
वो किसी सोच की मानिन्द छुएगी मुझको

कभी आएगी नज़र साफ़ कभी धुँधली सी
रौशनी की वो किरन बन के कभी बिजली सी
मैं निगाहों से कई बार उसे चूमूँगा
अपने होंठों पे ज़ुबाँ फेर चखेगी मुझको

वो ख़्यालों में कभी आ के मुझे झिड़केगी
कभी होकर वो ख़फ़ा मुझपे बहुत बिगड़ेगी
कभी झगड़ेगी बहुत मुझसे नहीं बोलेगी
कभी ख़ामोशी से चुपचाप सुनेगी मुझको

लम्हा-लम्हा मेरे अल्फ़ाज़ उसे ढूँढेंगे
क़तरा-क़तरा वो मेरे ज़ेहन में ढल जाएगी
अपनी साँसों में मैं इक रोज़ उसे जी लूँगा
मेरी सूरत में वो फिर रोज़ जिएगी मुझको

उसको पहनाऊँगा जब रेशमी लफ़्ज़ों का लिबास
रेज़ा-रेज़ा मेरे हाथों में सिमट आएगी
मैं हथेली की लकीरों में उसे खो दूँगा
वो लकीरों से परे ढूँढ ही लेगी मुझको



वो नक़्श-नक़्श मेरे चेहरे पे उभर आएगी
वो लफ़्ज़-लफ़्ज़ मेरी सोच में बस जाएगी
मैं अपनी सोच की कोख से इक रोज़ उसे जन्मूँगा
वो अपनी कोख से इक रोज़ जनेगी मुझको

मुझसे इक नज़्म का वादा है मिलेगी मुझको ।।

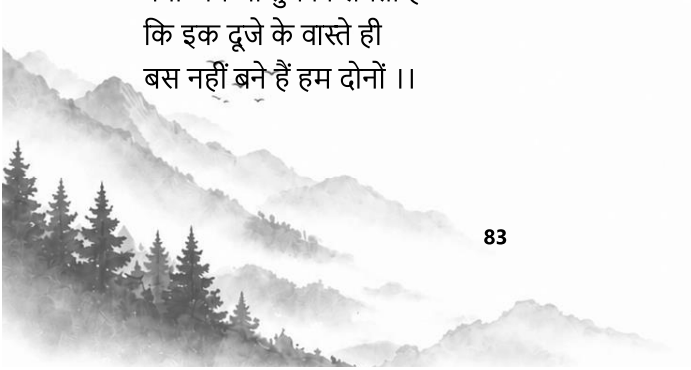






81. हम दोनों

कई लाख करोड़ों मीलों में
फैली हुई ये कायनात
कई लाख करोड़ों कहकशाँओं में
बाँधे फिरती है सुनते हैं
कई लाख करोड़ों सय्यारे
इन लाख करोड़ों सय्यारों में
अपनी इक धरती भी है
इस धरती पर भी कितने ही
मुल्कों में बसी है ये ख़लक़त
इतने सारे इन मुल्कों में
ये अपना एक वतन भी है
और अपने वतन में भी देखो
इन लाखों गाँवों-शहरों में से
ये अपना एक शहर भी है
इस शहर की लाख दुकानों में
ये कॉफ़ी हाउस भी है जिसमें
इक टेबल पर हम बैठे हैं
ये कोई इत्तेफ़ाक़ नहीं है
अल्लाह का मन्सूबा है
क्या अब भी तुमको लगता है
कि इक दूजे के वास्ते ही
बस नहीं बने हैं हम दोनों ।।







82. बिज़नेस

तुझसे सीखे कोई मौला बिज़नेस की बारीकियाँ
एक ही प्रोडक्ट को यूँ मुख़्तलिफ़ रँगों में तुम
बेचते फिरते हो जैसे सारी मख़्लूक़ात को
कामयाबी का ये मॉडल है यक़ीनन लाजवाब
चालीस टीवी चैनलों पर सुबहो-शाम
मुख़्तलिफ़ एजेंट तेरे कर रहे हैं नशरियात
गारँटियों-वारँटियों के दावे-वादे सब तेरे
हर धर्म के कस्टमर के वास्ते है कुछ न कुछ
दुनिया भर के अहम शहरों में ये तेरे मास्टर फ़्रैन्चाइज़ी
हर मुहल्ले में सजी तेरी दुकानें मज़हबी
फ़्रैन्चाइज़ी नेटवर्क तेरा वाक़ई है बेमिसाल
तुझसे सीखे कोई मौला बिज़नेस की बारीकियाँ ।।







83. बिरहन

सूरज का रस्ता तकती है
रोज़ ही ऐसे बिरहन रात
तारा-तारा गिनते-गिनते
रोने लगती है ये रात
जिसने प्यार किया हो जाने
बिरहा दर्द किसे कहते हैं
मिल जाता है दर्द ये जिनको
कम ही वो ज़िन्दा रहते हैं
इन्तज़ार करते-करते ही
इसने उम्र गँवाई है
इस बिरहन की क़िस्मत में
बस इक लम्बी तन्हाई है
चूम के अपने चाँद का मुखड़ा
अपने दिल को समझाती है
सीने से चिपका कर उसको
वो सोचों में खो जाती है
हिचकी सिसकी चीख़ें आहें
जब लब तक आने लगती हैं
हवा के सुर से होंठ लगाकर
कुछ न कुछ गाने लगती है
विरह राग छेड़ा है इसने
ये पगली कुछ कर जाएगी
सूरज सुबह आ जाएगा
रात सुबह तक मर जाएगी ।।





84. दुआ

मैं तेरे दर पे आया तो हूँ लेकिन ऐ ख़ुदा मेरे
हज़ारों नेमतों के बाद तुझसे और क्या माँगूं
बस इतनी सी ज़रा तौफ़ीक़ कर देना अता मुझको
कि जब तलक ज़िन्दा रहूँ मुहताज-ओ-मुन्हसर न रहूँ
अपने ही बूते पे जब पा लूँ उरूजे-ज़िन्दगी
अपनी अज़मत की चकाचौंध से रख सकूँ ख़ुद को जुदा
अपनी ही मर्ज़ी से और बस अपने ही अन्दाज़ में
धीरे-धीरे कर सकूँ मध्दम अपनी इस हस्ती की लौ
और वक़्ते-मर्ग भी बस अपने ही अन्दाज़ में
अपनी शर्तों पर जहां को कह सकूँ मैं अलविदा ।।







85. ज़िन्दगी

शाख़ इक टूटी हुई लटकी हुई
एक पत्ता सूख कर गिरता हुआ
इक सदी ख़ामोश सी गुज़री हुई
एक लम्हा आँख में अटका हुआ

सोच कोई तड़प कर मरती हुई
कोई तागा ज़ेहन में उलझा हुआ
ज़ख़्मी लफ़्ज़ों पर ज़ुबाँ रुकती हुई
एक मिसरा शे'र से उखड़ा हुआ

एक रिश्ते की चुभन बढ़ती हुई
ज़ख़्म कोई रात दिन रिसता हुआ
चीख़ कोई होंठ में जकड़ी हुई
दर्द कोई दाँत में भींचा हुआ

ज़िन्दगी क्या है मेरी
बस इक बिलखती नज़्म है ।।







86. वसन्त

पीले पत्तों पर पुराने मौसमों के दस्तख़त
लौटकर आने का फिर से अहद सा करते हुए
दिन के दरवाज़े पे दस्तक दे रही सी चाँदनी
रात के दामन से झड़कर ओस सी गिरती हुई

बादलों के बीच बनती छोटी-छोटी बदलियाँ
बारिशें बेताब सी बरबस बरसने के लिए
इक नये मौसम की ख़ुशबू है फ़ज़ा में आजकल
कोख धरती की नई उम्मीद से भरती हुई

कोसे-कोसे ले के बोसे गुनगुनी सी धूप के
ले के अँगड़ाई उठे हैं सर्द से सिकुड़े से दिन
बाँझ शाख़ों के बदन पर फूटती ये कोंपलें
इक नई तहज़ीब की तख़्लीक़ सी होती हुई ।।







87. मुहब्बत

इक लड़की मेरे ख़्वाबों में आती है
छेड़-छेड़ के मुझको हँसती रहती है
और कभी मेरी सोचों की सड़कों पर
खुल्लम-खुल्ला दौड़ती फिरती रहती है

इक लड़की उड़ती फिरती है तितली सी
मेरी सोच के फूलों पर मँडराती है
सिहर-सिहर जाते हैं मेरी सोच के फूल
जब वो उन पर बैठ के यूँ उड़ जाती है

इक लड़की की बातें बहुत निराली हैं
बात-बात पर मुझसे रोज़ झगड़ती है
रखकर दोनों हाथ कमर पर ग़ुस्से में
कुछ न कुछ कहती रहती है लड़ती है

इक लड़की की आँखों में कुछ सपने हैं
इन सपनों से मेरा भी इक रिश्ता है
आज से उसके सारे सपने मेरे हैं
उनको हमने मिलकर पूरा करना है

वो लड़की इतनी नाज़ुक है कि उसको
एहतियात से मैंने दिल में रखा है
हाँ वो लड़की मुझको अच्छी लगती है
मैंने उसका नाम मुहब्बत रखा है ।।



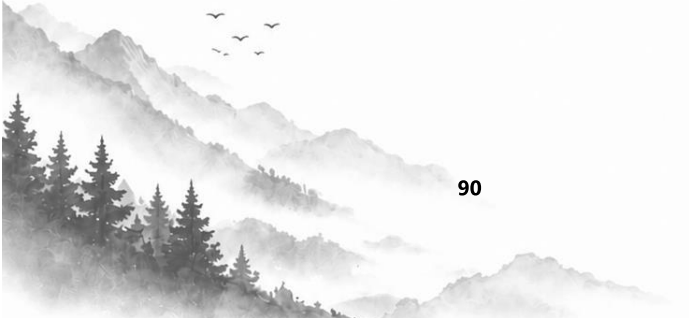


88. तेरी आँखें

तेरी आँखों में सुबह का सूरज है
तेरी पलकों पर हैं रातें टिकी हुई
तू जब आँखें खोले सुबह होती है
पलक झपक ले रात शुरू हो जाती है

तेरी आँखों में जो सुन्दर सपने हैं
उन सपनों से रची गई है ये दुनिया
तू जो आँखें खोले दुनिया चलती है
बन्द करे तो कायनात थम जाती है

तेरी इन आँखों में मेरा जीवन है
जी उठता हूँ देख के तेरी आँखों को
बन्द इन्हें कर लोगी तो मर जाऊँगा
मुझको इन आँखों में ज़िन्दा रहने दो ।।







89. शिकवे

ज़िन्दगी से लाख शिकवे थे मुझे
जब तलक
जाना न था
कि तुमसे चल कर
तुम तलक ही
पहुँचना है ज़िन्दगी ।।







90. मिस वर्ल्ड

हसरत भरी निगाहों से देखती है वो
दीवार पर लटकी हुई ऐश्वर्य की तस्वीर
और हैरान हो जाती है वो
सचमुच कितनी मिलती-जुलती है
उससे ये सूरत उसकी
सच ही तो कहता था वो झूठा मुआ अफ़ज़ल
किसी मिस इँडिया, मिस वर्ल्ड से कम नहीं है तू
तस्वीर लेकर आऊँगा उसकी, ख़ुद ही देख लेना
उन्नीस नहीं है तू
अपने माज़ी की दिल दहला देने वाली
यादों में खोकर सोचने लगती है वो
उसके शराबी अब्बू की
रोज़ मार खाती उसकी अम्मी
इक दिन भाग न गई होती अगर घर से
पालने पड़े न होते बचपन में ही उसको
अगर अपने भाई बहन
आम बच्चों की तरह
हो सकी होती अगर वो भी कहीं जवान
तक़दीर उसकी अगर
ज़्यादा नहीं थोड़ी ही अच्छी होती
और पढ़ गई होती अगर
वो भी कोई आठ दस क्लास
खेलकर जिस्म से उसके बेच गया होता न अगर
कोठे पे उसको उसका अपना ही चाचा
तो आज शायद वो भी कोई मिस इँडिया,
मिस वर्ल्ड बन गई होती ।।





91. बोसा

एक ही बोसे में कह दूँगा
जो भी तुमसे कह नहीं पाया
तेरे दिल का दर्द मैं सारा
इक बोसे में पी डालूँगा
एक ही बोसे में लिख दूँगा
अपने इश्क़ का सारा क़िस्सा
इक बोसे से तेरी रूह में
अपनी रूह का सारा इश्क़ उँडेलूँगा ।।







92. रात और मैं

रात मेरे सर चढ़ के जागती रहती है
ज़िद है मैं सोऊँगा तब ये सोएगी
इसको कुछ मालूम नहीं ये नादाँ है
नींद कहाँ आती है ग़म के मौसम में
मैं लिहाफ़ में घुसकर बस सोने का नाटक करता हूँ
मुझको सोता देख ये शायद सो जाए
ज़रा सी करवट भी बदलूँ जग जाती है
बैठ के मेरे सिरहाने सहलाती है
हल्के-हल्के वो मेरे पेशानी को
फ़िक्र की शिकनें मध्दम होने लगती हैं
दिन के आने से पहले हम दोनों ही सो जाते हैं ।।







93. ख़ुशियाँ

बुझे-बुझे से क्यों रहते हो
ग़म में क्या इतनी ताक़त है
छीन सके ये ख़ुशियाँ सारी
ख़ुशियाँ तो हर लम्हा हर दिन
नई-नई शक्लों में आकर
दिल पर दस्तक देती हैं
तुम उठ कर दरवाज़ा खोलो
उनको अन्दर आ जाने दो
ख़ुशियों को देखेगा तो ग़म
ख़ुद ही बाहर हो जाएगा ।।

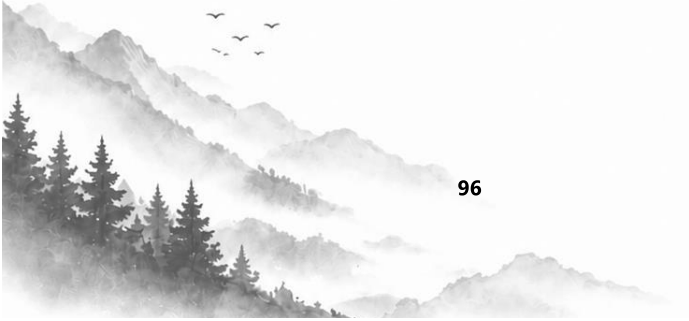






94. दो मिसरे

तुम्हारी सुरमई आँखों से गिरकर
जो फिसलते हैं तुम्हारे नर्म गालों पर
वो गीले से बड़े नमकीन से
नाज़ुक से दो मिसरे
उन्हें जब ग़ौर से देखो
कई मानी टपकते हैं
ये दो मिसरे मुझे दे दो
मेरा इक शे'र बन जाए ।।







95. लव ट्राएँगल

चाँद को ये मालूम था
धरती सूरज के चक्कर में है
फिर भी वो बस धरती से
यकतरफ़ा मुहब्बत करता था
सूरज ने ये जान लिया था
चाँद हमेशा धरती के ही
इर्द-गिर्द मँडराता था
इक दिन बस उसने ग़ुस्से में
चाँद को घूर के देखा था
बस उस दिन से चाँद के मुँह पर
इतना बड़ा सनबर्न हुआ है ।।







96. आईना

आईना झूठ कहता है
जो तुमसे रोज़ कहता है
कि तुम बस ख़ूबसूरत हो
मेरी आँखों में देखो अक्स अपना
ग़ौर से देखो
जहां में तुमसे ज़्यादा ख़ूबसूरत है नहीं कोई ।।







97. हमज़ाद

वो मेरा हमज़ाद नहीं था
ग़ैर मुल्क का बन्दा था
उसका चेहरा उसकी आँखें
बाल भी उसके और ही थे
रँग भी उसका मुझसे ज़्यादा गोरा था
और दुआओं में भी वो
और ही किसी ख़ुदा को याद किया करता था
उससे लेकिन जाने ज़ेहन की किस सतह पर
एक अजीब सा उन्स हुआ जाता था मुझको
कभी-कभी तो लगता था
वो मेरी माँ का ही जाया था
हर इक बात में बिल्कुल मेरे जैसा था
मेरे जैसी बातें करता
मुझ जैसे ही हँसता था
इक दिन जब
जज़्बात का उसके क़त्ल हुआ
मैंने देखा उसके अश्क भी मेरे अश्कों जैसे थे
उसके ज़ख़्म भी मेरे ज़ख़्मों जैसे थे
उसकी चीख़ें मेरी चीख़ों जैसी थीं
उसके दर्द भी मेरे दर्दों जैसे थे
उसका ख़ूँ भी मेरे ख़ूँ के जैसा था
उस दिन से हैरान हूँ मैं कि
ग़ैर मुल्क का होकर भी
वो मुझ जैसा ही कैसे था ।।





98. फफोले

कुछ लोग फफोलों की तरह होते हैं
सूजे-सूजे से रहते हैं
ख़फ़ा-ख़फ़ा से लगते हैं
बस इक मुलायम से
नाज़ुक से लफ़्ज़ के साथ
ज़रा सा छू लो कहीं
तो रिस पड़ते हैं
रो पड़ते हैं ।।







99. कली

कलियों के खिलने पे हैं
इस चमन में पाबन्दियाँ
क्यों खिली फिर तू कली
जानती थी क्या नहीं
तू खिली तो एक दिन
तुझको भी मसला जाएगा ।।







100. आज का दिन

आज का दिन कमज़ोर सा दिन है
आज सुबह भी अलसाई अलसाई है
मटमैली है आज फ़ज़ा की चादर भी
धुँधले-धुँधले अक्स दिखाई देते हैं
और नज़र की हद भी सिमटी-सिमटी है
रात चाँद के हाथ से सुरमी छूट गई थी
सारा सुरमा गिरकर हर सू बिखर गया है
हाथ बढ़ाकर तुम थोड़ा आकाश पोंछना
सूरज का चेहरा तो ज़रा नज़र आए ।।







101. इन्सान

निकल कर खोहों से
दरख़्तों से उतर कर
और जँगल छोड़कर
बनाए घर, मुहल्ले, गाँव, गलियाँ
शहर, सड़कें, कारख़ाने, मॉल भी
बनाकर ऊँट, घोड़े, गाय, कुत्ते दोस्त
उसने जानवर के साथ रहना
सदियों पहले सीख लिया था
साथ मगर इन्सान के रहना
इन्सां को आया ही नहीं ।।







102. ख़बरें

ख़बरें कभी ख़ामोश नहीं रहतीं
ख़बरें ख़ामोश नहीं रह सकतीं
उन्हें बोलना ही पड़ता है
अच्छी हों या बुरी
ख़बरों को चुप रहने की आदत ही नहीं
यही सबसे बड़ी ख़ासियत है उनकी
और यही सबसे बड़ी कमज़ोरी भी
उन्हें बोलना है और उसी वक्त बोलना है
जब कि फैल रहा होता है हर सू
हैरत भरी नज़रों का हुजूम
तैर रहा होता है फ़ज़ा में
डरी हुई सी ख़ौफ़ज़दा
आवाज़ों का मद्धम सा शोर
फ़िरकादाराना नफ़रतों का ज़हर
तो कहीं सियासी रैलियों में
बँट रहा होता है वादों का शहद
कहीं हार जाने का ग़म
तो कहीं जीत का जश्न
हो रहे होते हैं जब हादसात
और आँखों में तैर रहे होते हैं
ख़ौफ़नाक मँज़रों के निशाँ
ख़बरें कभी चुप नहीं होतीं
ख़बरें बोलती ही रहती हैं
उन्हें बोलते ही रहना है





ख़बरें सोती भी नहीं
जागती रहती हैं हमेशा
क्योंकि ख़बरें अगर सो गईं
तो लोग कैसे जागेंगे
क्योंकि ख़बरें अगर ख़ामोश हो गईं
तो लोग कैसे बोलेंगे
ख़बरों को बोलना ही पड़ता है
ख़बरें ख़ामोश नहीं रह सकतीं ।।







103. तेरे बिन

तेरे बिन
गुज़रे गिन
कितने दिन
तेरे बिन
दिन तो दिन
इक भी छिन
नामुमकिन ।।







104. बीमार दिन

लिस्सा है सूरज का चेहरा
ज़र्द-रँगी धूप है
मौसम भी कुछ थका-थका है
आज का दिन बीमार चढ़ा है ।।







105. मुक़य्यद

मैं कायनात की
सारी वुसअत
लाँघ के तुम तक पहुँचा था
तू क़ैद
वक़्त के घेरों में
न लाँघ सकी हद उम्रों की ।।







106. बरसात

बरसातों में अक्सर ऐसा होता है
रात बड़े ज़ोरों की बारिश होती है
और सुबह भीगे कम्बल-सा
गीला-गीला, भारी-भारी, सीला-सीला
सारा दिन आकाश टपकता रहता है
कभी-कभी जब धूप चमकती है इस पर
कहीं-कहीं से थोड़ा सूखने लगता है
रात बड़े जोरों की बारिश बरसी थी
आज सुबह इक तीखा सूरज निकला है
रात को फिर से यही ओढ़ कर सोना है
आज उफ़क़ पर मैंने फिर आकाश सुखाने डाला है ।।







107. अफ़सर

बड़ी सी बिल्डिंग के
बड़े से एक कमरे में
बड़े से टेबल के पीछे
बड़ी सी कुर्सी पर
अफ़सरी तहज़ीब का वज़नी लबादा
ओढ़कर बैठा हुआ वो शख़्स
तुमने भी यक़ीनन देखा होगा
मोटे शीशों के चश्मे के मोटे रिम के ऊपर से
घूर-घूर के देखता था जो सब को
कितने सवाल किया करता था
आज उसे जब सब्ज़ी की रेहड़ी पर
टींडे बीनते देखा तो हैरान हुआ मैं
हँस-हँस कर बातें करता वो सख़्त-मिज़ाज
कितना सादा लगता था
पूछा तो ये राज़ खुला कि
अब वो रिटायर हो गया है
बस कुछ रोज़ में वो भी बस
हम जैसों में ढल जाएगा
सीखेगा सब तौर तरीक़े
हम जैसी ही बात करेगा
हम जैसा ही हो जाएगा ।।







108. ब्यास

ब्यास कुँड में देखा था नन्हा सा बच्चा
घुटनों के बल बैठ छपक-छपक छप-छप करता
लगे फिर पाँव जब उसको
निकल भागा उछलता-कूदता
वो पत्थरों, चट्टानों से टकराता
जवानी में तो इतना जोश
कि देखा कहीं न था
कि उसके अँग-अँग से मानो
बस बिजली निकलती हो
नहीं हिम्मत किसी में थी
कोई रस्ता न दे उसको
वो अपना रास्ता ख़ुद ही बनाता, तोड़ देता था
तरक़्क़ीयाफ़्ता लोगों ने उसको बाँध डाला है
वो उसके जोश में से अब वहाँ बिजली बनाते हैं
बिना ताक़त के अब बीमार सा वो नातवाँ बूढ़ा
झुकाए सर को अपने धीरे-धीरे चल निकलता है
मुझे अब देख कर उसको बड़ी तक़लीफ़ होती है
उसे इन मतलबी ख़ुदग़र्ज़ और बेदर्द लोगों ने
कहीं का भी नहीं छोड़ा ।।







109. लफ़्ज़

कुछ लफ़्ज़ बड़े अच्छे होते हैं
नर्म मुलायम, रूई के फाये जैसे
ज़ख़्मों पर रख दो तो दर्द को पी जाते हैं
हल्की-हल्की गर्म टकोरें करते हैं तो
अन्दरूनी ज़ख़्मों को राहत मिलती है
कुछ लफ़्ज़ मगर ऐसे भी ज़ालिम होते हैं
तीखे तेज़ नुकीले और ज़हरीले भी
चुभते हैं तो रूह भी ज़ख़्मी होती है
वक़्त गुज़रता है तो ज़ख़्म ये गहरे भी
धीरे-धीरे कुछ कुछ भरने लगते हैं
ख़ामोशी मख़मल सी होती है लेकिन
लम्बी देर रहे तो जान ही ले लेती है ।।







110. ढोंग

ढोंग करते हैं
जब ये कहते हैं
बिन तेरे यार
जी नहीं सकते
जिस्म की भूख
मिट जाने तलक
ये रिश्ता है
दिल की किसको
यहाँ ज़रूरत है ।।







111. झूठा

कितना झूठा था मैं
जब कहता था
मेरी जाँ हो तुम
बिन तुम्हारे
एक पल भी
जी नहीं सकता हूँ मैं
अब तुम नहीं हो
फिर भी देखो
जी रहा हूँ शान से ।।







112. चाँद

तुम्हें देखा है अक्सर
आस्माँ में एक खिड़की के पीछे
खड़े होकर ताक-झाँक करते हुए
चली जाती है खुलती
रोज़ खिड़की कुछ ज़रा ज़्यादा
तुम्हारा चेहरा कुछ-कुछ
ज़रा सा और दिखता है
फिर इक दिन
पूरी खुल जाती है खिड़की
और तुम्हारी सब शरारत पकड़ी जाती है
मिटाने झेंप अपनी
तुम कई दिन फिर नहीं आते
पड़े रहते हो खिसियाने से
शायद अपने कमरे में
शक्ल से जितने दिखते हो
शरीफ़ उतने नहीं हो तुम ।।







113. डिलीवरी

मेरे ज़ेहन की कोख में
मेरी सोच का कोई बीज पड़ा था
लफ़्ज़ था कोई
या शायद वो एक सतर थी
उसकी साँसों को, धड़कन को
उठते-बैठते सोते-जगते
अपने अन्दर हिलते-डुलते
मैं महसूस किया करता था
धीरे-धीरे वो बस मेरे
सारे वजूद में उतर रही थी
शक्ल कभी बनती मद्धम सी
फिर ग़ायब हो जाती थी
कई दिनों तक मैं बेबस सा
भारी भारी ज़ेहन उठाकर
फिरता रहा हामिला जैसा
इक दिन ज़ेहन में जैसे कोई बिजली कौंधी
उसके आने की आहट से
हल्की सी घबराहट में भी
एक अजब सी लहर खुशी की
मेरे दिलो-दिमाग़ में उतरी
उठकर जल्दी-जल्दी मैंने
काग़ज़ पर कुछ लफ़्ज़ उतारे
नज़्म के जैसी शक्ल बनी
जो मुझसे गले लिपट कर रोई





मैं भी रोया, गले लगाया, माथा चूमा
थपकी दी और सुला दिया
दर्द से कुछ कुछ राहत है अब
ज़ेहन से भारी बोझ हटा है
पैदाइश का दर्द उठाकर
मैंने ये जो नज़्म लिखी है
ये मेरी कोख से जन्मी है
मेरी बच्ची है ।।





114. गुलज़ार साहब के यौमे-विलादत पर

इन्सानी जज़्बात की
दुखती नब्ज़ पकड़कर
तुम जिस तरह से काग़ज़ पर
बुन देते हो लफ़्ज़ों का ताना-बाना
ये बस तुम ही कर सकते हो
और के बस की बात नहीं है
तुम कमाल के शायर हो
बस जितना जीओ कमाल जीओ
गुलज़ार! दुआ ये है रब से
तुम और अभी सौ साल जीओ ।।



गुलज़ार – 1

बरसों इन नज़्मों को पढ़कर
अक्सर उन नाज़ुक लम्हों में
बहुत सुकून मिला है मुझको
राहत सी महसूस हुई है
गुलज़ार गुज़ारिश है तुमसे
तुम यूँ ही बुनते रहो हमेशा
उधड़े रिश्तों के तागों से
रिसते दर्द में अश्क पिरोकर
ज़ख़्मी एहसासात की दुनिया
ये दुनिया अच्छी लगती है
ये दुनिया मेरी दुनिया है ।।







गुलज़ार – 2

जब भी नज़्म तुम्हारी कोई पढ़ता हूँ
इक सिहरन सी दौड़ उठती है
जिस्म के रोंएं-रोंएं में
कई दिनों तक उन लफ़्ज़ों का
ज़ायका मुँह में रहता है
कई रातों तक ज़ेहन में
वो अल्फ़ाज़ घूमते रहते हैं
इक अन्जाने दर्द का
दिल में तोरा फेरा रहता है
वो लफ़्ज़ सभी जाने पहचाने लगते हैं
दर्द भी कुछ अपना अपना सा लगता है
मेरे दिल में दर्द का डेरा रहता है ।।







त'आरुफ़

शायर- जे पी सिँह "साहिर"

जन्म- 13 जुलाई, 1956
गाँव – भवनाल, ज़िला – होशियारपुर, पँजाब

पढ़ाई-

- सरकारी प्राइमरी स्कूल, भवनाल
- सैनिक स्कूल, कपूरथला
- स्वामी प्रेमानँद महाविद्यालय, मुकेरियाँ
- एम ए इँग्लिश - पँजाब यूनिवर्सिटी चँडीगढ
- एम ए उर्दू - पँजाब यूनिवर्सिटी चँडीगढ़
- एम बी ए - डॉक्टर सी वी रमन यूनिवर्सिटी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सर्विस-

- इँडियन आर्मी, 10 साल
- पँजाब सिविल सर्विसेज़, 22 साल

आने वाली किताबें-

- बानो नॉवेल
- तेरा हिज्र मेरा नसीब है - शायरी
- आधी रोटी जितना चाँद - शायरी
- क़तरा-क़तरा दर्द - शायरी
- इक शे'र सुनाता हूँ - शायरी
- नगीने - शायरी
- एक कसक सी रहती है - शायरी





- पश्मीने के थान - शायरी
- एकोज़ ऑफ़ साईलैंस - इँग्लिश पोएट्री
- रूह दीआँ पीड़ाँ - पँजाबी कविता



